CONTEMPORARY RESEARCH IN INDIA
ISSN 2231 - 2137

मेंहदवी सम्प्रदाय : एक ऐतिहासिक झलक

डॉ0 ज़ेबा नक़वी, *असिस्टेन्ट प्रोफेसर, मध्यकालीन इतिहास, सदन लाल सॉवल दास खन्ना महिला महाविद्यालय, इलाहाबाद*
संयुक्त–इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

Received: 19/08/2017	Edited: 24/08/2017	Accepted: 31/08/2017

शोध सारांशः *भारत में मध्यकाल में सूफ़ीवाद का प्रारम्भ हुआ। वास्तव में जिन लोगों ने वैभव व सम्पत्ति परित्याग कर सन्यास ग्रहण कर शरियत के मार्गपर चलना व पवित्र जीवन व्यतीत करना प्रारम्भ किया वे लोग ही सूफ़ी कहलाने लगे। सूफ़ीमत इस्लाम धर्म में उदार, रहस्यवादी और संश्लेषणात्मक प्रवृत्तियों का प्रतिनिधित्व करने वाली विचारधारा है। वारहवीं शताब्दी के अन्त में मुहम्मद गौरी के अभियानों के काल में भारत में सूफ़ियों का प्रसार हुआ, उसके सिलसिले भारत में संगठित होने लगे। अधिक लोकप्रिय सिलसिलों में चिश्ती, सोहरावर्दी, कादरी, शत्तारी और नक्शबंदी सम्प्रदाय थे। मेरा शोध पत्र लिखने का उद्देश्य मेहदविया सम्प्रदाय पर प्रकाश डालना था शर्की काल में मेहदविया सम्प्रदाय का प्रचलन हुआ जिन पर समग्र रूप से प्रकाश नहीं डाला गया अतः हमने ये विषय चुना। सैय्यद मुहम्मद जौनपुरी ने सूफ़ी सिलसिला मेंहदविया सम्प्रदाय की स्थापना की। उन्होंने स्वयं को मेंहदी घोषित किया। मेंहदविया सम्प्रदाय के लोग दायरों में रहते थे। इन्होंने धर्म, शिक्षा, समाज में सौहार्द एकता तथा नैतिक मूल्यों की शिक्षा पर ज़ोर दिया। मेंहदविया सम्प्रदाय के सूफ़ियों ने हिन्दी तथा क्षेत्रीय भाषाओं में भी उन्नति की। इस प्रकार मेंहदविया सम्प्रदाय के सूफ़ियों ने भारत के शैक्षणिक तथा सांस्कृतिक विकास में सहयोग दिया।*

बीज–शब्दः *मेंहदविया सम्प्रदाय।*

सैय्यद मुहम्मद जौनपुरी ने मेंहदविया आन्दोलन का प्रारम्भ किया और स्वयं को मेंहदी घोषित किया।[पप] पैग़म्बर मुहम्मद के देहान्त के पश्चात् इस्लाम में मसीही आन्दोलन का प्रारम्भ हुआ। यह विचारधारा जो जोरास्ट्रियन एवं ईसाई धर्म से ग्रहण की गई थी। मुस्लिम मसीहा को मेंहदी कहा गया। अल–मेंहदी का शाब्दिक अर्थ 'रास्ता दिखाने वाला' (पथ प्रदर्शित) होता है। डी.एस. मारगोलियथ ने लिखा है कि ''जितनी भी कौमें हैं जैसे यहूदी, ईसाई और मुस्लिम, सब एक मुक्तिदाता के आकांक्षी हैं। अर्थात् अहले पुस्तक का मानना है कि कोई मेंहदी आएगा तो समस्त बुराइयों को दूर भगाएगा।''[पपप] असना–ए–अशरी शिया परम्परा के अनुसार 12वें इमाम मुहम्मद पुत्र इमाम हसन असकरी जो 873ई. में आत्मलोप हो गए थे, अभी भी जीवित है तथा अन्तिम निर्णय के दिन से पूर्व प्रकट होंगे, परन्तु सुन्नी लोग इसे कोई महत्त्व नहीं देते। सुन्नियों के अनुसार पैगंबर के उत्तराधिकारी प्रथम चार खलीफ़ा 'मेंहदियान' कहे गए।[पअ]

अतः इस्लाम के इतिहास में समय–समय पर मेंहदी होने का दावा किया गया और कुछ लोगों ने उनका समर्थन भी किया। इस सिलसिले के पहले व्यक्ति जिनको मेंहदी की उपाधि से विभूषित किया गया, वह मुहम्मद अल–हनीफ़ थे। इनको योद्धा मुख्तार द्वारा यह उपाधि दी गई थी तथा ये हज़रत अली अलैहिस्सलाम के पुत्र थे।[अ] इसके बाद नवी सदी हिजरी के विभिन्न दौर में बहुत से मेंहदी प्रकट हुए जो लोगों में राजनीतिक एवं सामाजिक उथल– पुथल का परिणाम थे। भारतीय उपमहाद्वीप में मेंहदी का दावा प्रस्तुत करने वाला प्रथम व्यक्ति रूक्न था, जो सुल्तान फिरोज़शाह (1351–88ई.) के काल में दिल्ली का रहने वाला था।[अप] उसे मृत्युदण्ड दिया गया।

सैय्यद मुहम्मद जौनपुरी द्वारा मेंहदवी के इतिहास में एक नए अध्याय का आरम्भ होता है, इन्होंने मेंहदी आन्दोलन को नवजीवन प्रदान किया। प्रारम्भ के अधिकतर मेंहदवियों को राजनीतिक आकांक्षाओं से जुड़ा हुआ माना जाता था। किन्तु सैय्यद मुहम्मद जौनपुरी इन सबसे भिन्न थे। इनका उद्देश्य इस्लाम में सुधार तथा बुराइयों को दूर भगाना था।[अपप] मेंहदवी स्रोतों के अनुसार सैय्यद मुहम्मद जौनपुरी का जन्म सुल्तान महमूद शर्की के काल में सोमवार के दिन 14 जमादिउल अव्वल 10 सितम्बर, 847 हिजरी/1443ई. में हुआ था।[अपपप] मेंहदवी परम्परा के अनुसार उनकी शिक्षा चार वर्ष की आयु में आरम्भ हुई।[8]

1495 ई. में ये हज के लिए मक्का गए।[9] यही एक दिन काबे की परिक्रमा के बाद 1495–96 में रुक्न (काबे का काला पत्थर) और मकाम (वह स्थान जहाँ पैगंबर इब्राहिम ने प्रार्थना की थी) के बाद खुले तौर पर भरी भीड़ में इन्होंने मेंहदवियत का दावा कर दिया।[10] क़ाज़ी अलाउद्दीन और मियां निजाम इस घटना के गवाह के रूप में थे।[11]

मक्का से ये मदीना जाने के बजाय वापस भारत में गुजरात में आ गए।[12] अहमदाबाद को अपना केन्द्र बनाया, जहाँ बहुत से लोग इनके शिष्य हो गए[13] स्वयं को मेंहदी घोषित किया।[14] जिससे वहां के लोग इनके विरोधी हो गये। सैय्यद मुहम्मद ने अनेक शासकों को पत्र लिखे कि वह उनको मेंहदी स्वीकार करें, परन्तु उल्मा के कठोर विरोध के कारण उन्हें गुजरात से निष्कासित कर दिया गया। वह थट्टा चले गए तथा वहां से अफ़गानिस्तान, जहां 1505ई0 में इनकी मृत्यु हो गई।[15] सैय्यद मुहम्मद के उत्तराधिकारी सैय्यद महमूद थे। उनके उत्तराधिकारी ख्वान्दमीर थे जो 1524ई0 में गुजराती सेना में युद्ध करते हुए हताहत हुए। ख्वान्दमीर ने हिन्दी और फ़ारसी में सात शोध निबन्ध लिखे, जिसमें सैय्यद मुहम्मद की शिक्षाओं का वर्णन किया है। मेंहदवी आन्दोलन के बाद के इतिहास में ख्वान्दमीर ने उत्कृष्ट भूमिका निभाई।[16]

मौलाना अबुल कलाम आज़ाद और प्रो. खलीक अहमद निज़ामी ने सैय्यद मोहम्मद के मेंहदवी होने के दावे को इनके काल की राजनीतिक, सांस्कृतिक और धार्मिक वातावरण के विरूद्ध महान विद्रोह कहा है।[17]

वास्तव में सैय्यद मो0 जौनपुरी का प्रचार वातावरण के बिलकुल विपरीत तथा विद्रोह का एक बिगुल था। सांसारिक मोह का प्रभाव प्रत्येक ओर प्रभावित था। धार्मिक सिद्धान्तों की प्रतिदिन अवहेलना होती थी। उस समय के विद्वत्जन धर्म के विरूद्ध प्रचार कर रहे थे जिससे सीधे–सादे लोग विचलित होते थे। संतों ने अपने गलत रास्तों के लिए अच्छा बहाना खोज लिया था। अमीर और सुल्तान सभी भोग–विलास में व्यस्त थे। इस दूषित वातावरण ने सैय्यद मोहम्मद के हृदय को अत्यधिक प्रभावित किया। अतः उन्होंने सत्य के लिए अपना सब कुछ न्यौछावर कर दिया।[18]

मौलाना आज़ाद उनके प्रचार के सम्बन्ध में लिखते हैं– ''मेरा विचार है कि इसकी नींव सत्य पर आधारित थी। दूसरे शब्दों में सत्य घोषणा तथा भ्रममूलक विचारों से लोगों को वंचित रखना इसका विशेष ध्येय था। स्वयं सैय्यद मोहम्मद और उनके सहयोगी बड़े ईश्वर भक्त थे तथा पवित्र जीवन व्यतीत करते थे।[19]

सैय्यद मोहम्मद ने यह सफलता संयम, प्रेम व सद्व्यवहार, पवित्र आचरण और अपार ज्ञान से प्राप्त की। उनके समकालीनों का मानना था कि मेंहदी बहुत बुद्धिमान और दूसरों की भावनाओं को समझने वाले थे। उनका व्यक्तित्व आडंबर रहित सादा और पवित्र था। मेंहदी के इन समस्त गुणों का उनके जीवन पर बहुत प्रभाव पड़ा।[20] उनकी संगत ने दूसरों के लिए आध्यात्मिक संसार का मार्ग खोला। वे अपने वंशजों के समान बड़े राजनीतिक एवं चमत्कारी न थे जो शासन स्थापित करने के लिए प्रयत्नशील रहते या जिनका उद्देश्य शासन स्थापित करना हो बल्कि वह इस बात पर जोर देते कि लोगों को पवित्र जीवन व्यतीत करने की शिक्षा दी जाए और जिन्हें आध्यात्मिक एवं अलौकिक की भूख हो उन्हें रूहानियत का भोजन दिया जाए। कट्टर सुन्नी उल्मा भी उनकी पवित्रता और शिक्षा के विषय में प्रश्न नहीं उठा सकें।[21]

बदायूंनी उनके विषय में लिखता है कि सैय्यद मोहम्मद जौनपुरी महान वलियों के एक मुख्य वली थे।[22] इन्होंने हर प्रकार के लोगों को अपनी ओर आकर्षित किया। यहाँ तक कि चोर–डाकू–राहजन भी इनसे प्रभावित होकर अपने पेशे का छोड़ देते थे और अपना समस्त जीवन ईश्वर के लिए समर्पित कर देते। इन्होंने अपने समकालीन लोगों को इंसानियत के लिए इंसानियत का पाठ पढ़ाया। वास्तव में इनकी ईमानदारी, एकता और सब कुछ समर्पित करके दूसरों को समझने की भावना ही थी जिसने श्रोताओं को प्रभावित किया व सद्व्यवहार की किरणों से प्रकाशित किया, अर्थात्! नैतिक शिक्षा से परिपूर्ण कर दिया।

ए.ए. रिज़वी के अनुसार सैय्यद मुहम्मद ने बीस वर्ष के लंबे समय के बाद स्वयं को मेंहदी कहा।[23] इनके सम्मुख ईश्वर, इसका रसूल और कुरान ही मार्गदर्शक है और इस्लाम ही वह धर्म है जिसका अनुसरण किया जाए। शबईहिदुल विलायत में लिखा है कि इनके विरोधियों ने घोषणा की कि हम तुमसे कैसे वार्तालाप कर सकते हैं। जबकि तुम्हारा सम्बन्ध उपस्थित शरई स्कूल से नहीं है जबकि हम कूफे के अबु हनीफ़ा के स्कूल के पैरोकार हैं।[24]

मेंहदी यह समझ नहीं पा रहे थे कि उलमा उनका विरोध क्यों कर रहे हैं जबकि उन्होंने स्वयं को ईश्वर से जोड़ा है जो शरिअत का कानून है।[25] इन्होंने दावा किया जो कुछ मैं कहता हूँ वह ईश्वर की वाणी से मिलता–जुलता है और इसके आदेश का पालन है। नबी की शिक्षा से लोगों ने अलग–अलग धारणाएँ बना ली थीं, उनका विश्लेषण सबने अपनी तरह से किया और अलग–अलग मत देने लगे, तब इन्होंने विभिन्न मुस्लिम मतों में समानता पैदा करने का प्रयत्न किया। इन्होंने सदैव विभिन्न मतों की शिक्षाओं की अंधाधुंध पैरवी करने का विरोध किया, बिलकुल इसी प्रकार इन्होंने यह भी पसंद नहीं किया कि लोग इनकी शिक्षाओं को भी बिना सोचे–समझे अनुसरण करें।[26]

सैय्यद अतहर अब्बास रिज़वी दायरे के सम्बन्ध में स्पष्ट करते हुए लिखते हें कि साधारणतः ये शहर के दूरस्थ क्षेत्रों में, मुख्य रूप से मस्जिदों में रहना पसंद करते थे। वह स्थान जहाँ मेंहदी रहते थे दायरा कहलाता था। यहाँ सैय्यद मोहम्मद और इनके अनुयायी शरिअत के अनुसार निवास

करते। इनके कार्यों का सबसे मुख्य भाग जिक्र था, उल्मा को इस बात का भय था कि कहीं मेंहदवीवादी परम्परावादी मार्ग से हट न जाएं, लेकिन सैय्यद मुहम्मद ने ज़िक्र को अनिवार्य कर दिया।[27] बंदगी मियां अब्दुर रशीद ने लिखा है कि इनकी राय में हर वह वस्तु जिसका प्रयोग हानिकारक हो, नाजायज या अनैतिक हैं। ज़िक्र में इल्म या ज्ञान की इच्छा हो।[28]

सैय्यद एम.ए.ए. रिज़वी ने मेंहदी के बताए हुए कर्त्तव्यों का उल्लेख करते हुए लिखा है कि हिजरत (एक स्थान छोड़कर दूसरी जगह जाना) भी एक महत्त्वपूर्ण कर्त्तव्य था, जो मेंहदी ने अपने अनुयायियों को बताया था। उन्होंने अपने समर्थकों से कहा कि इसे शान्ति के साथ फैलाओं और वह स्थान छोड़ दो जहाँ शिक्षा देना बाधित हो। और उस स्थान का प्रेम त्याग देना चाहिए जो वह छोड़ चुके हैं। सैय्यद स्वयं अधिक दिनों तक कहीं पर नहीं ठहरते थे।[29]

आगे लिखते है कि मेंहदवियों के अनुसार कुरान के नियम दो भागों में विभाजित थे। पहला खंड शरीअत के अहक़ाम से जुड़ा था जिसे स्वयं मोहम्मद ने स्पष्ट किया। दूसरे खंड में इन्होंने उन शिक्षाओं का वर्णन किया जिसको आखिरी वली के द्वारा फैलाया जाएगा जो कि उन्होंने स्वयं को बताया है,[30] इसी सम्बन्ध में इन्होंने आठ सिद्धान्त बताए हैं[31]– 1.तर्क–ए–दुनिया (संसार त्याग), 2. सोहबत–ए–सादीकीन (सत्य का साथ), 3. उज़लत अल खुल्क़ (इंसानियत के साथ एकांतवास), 4. तवक्कुल (ईश्वरीय इच्छा में समर्पण), 5. तलब–ए–दीदार– ए–हक़ (ईश्वर की खोज), 6. उश (अपनी कमाई के 1/10 भाग बाँट देना), 7. ज़िक्र–ए–कसीर (बार–बार जिक्र करना) एवं 8. हिजरत (पलायन)।

मेंहदवियों ने कभी भी राजनीति या सांसारिक शान–ओ–शौकत में रुचि नहीं ली। यद्यपि इनके शेख़ ये दावा करते थे। आध्यात्मिक मंजिल में सबसे महत्त्वपूर्ण व्यक्तित्व होता है।[32] बावजूद इसके सैय्यद मुहम्मद सदैव स्वयं को ईश्वर व पैगंबर का नौकर समझते थे।[33] अतहर अब्बास रिज़वी ने लिखा है कि मेंहदवियों का यह विश्वास था इनकी रोज़ी ईश्वर की ओर से होती है। प्रत्येक व्यक्ति को रोज़ी के लिए ईमानदारी से काम करना चाहिए। ये कभी भी उपहारों पर निर्भर नहीं होते थे, जो कुछ भी ये प्राप्त करते दायरे के समस्त लोगों में बराबर बाँट लेते थे।[34] आगे वर्णन करते है। कि दान (खैरात व ज़कात) के अतिरिक्त मेंहदवियों को अपनी आय का दसवां भाग दायरे के फंड में देना होता था।[35] दायरे में ये बात सख्ती से मना थी कि नए अनुयायियों की लड़कियों से कोई विवाह नहीं कर सकता था जब तक कि एक वर्ष तक उसके चरित्र व व्यवहार को परख न लिया जाए।[36] पुराने अनुयायियों को शादी की अनुमति थी।

सैय्यद मुहम्मद जौनपुरी की मृत्यु इनके पुत्र और उत्तराधिकारी सैय्यद महमूद ने दायरों को फैलाना आवश्यक समझा। इस तरह बहुत से दायरों का उदय हुआ जिसने मेंहदवी शिक्षा को पूरे भारत और सीमावर्ती क्षेत्रों में फैलाया। भारत में इन्होंने गुजरात, खानदेश और अहमदनगर में अधिक प्रयत्न किया जहाँ उन्होंने नए अलग से दायरे बनाए।[37] जहाँ तक उत्तर का प्रश्न है इस प्रकार के दायरे आगरा, दिल्ली और नागपुर में स्थापित किए गए।[38] इनके मुख्य खलीफ़ा सैय्यद महमूद, सैय्यद ख्वांदमीर, शाह अब्दुल मजीद नूरी, मियां यूसुफ, मलिक अलाहदाद और शाह अमीन अहमद थे।

मेंहदवियों के एक स्थान से दूसरे स्थान पर भ्रमण करने से इन दायरों की गिनती में प्रगति होती गई और इस प्रकार इनकी कार्यवाहियों का जाल पूरे भरत में फैल गया। ये दायरे उन लोगों से भरे रहे थे जो लोग बहुत ही उत्साह से सैय्यद मुहम्मद के मिशन को प्रगति दे रहे थे।

मेंहदवियों ने हिन्दी तथा क्षेत्रीय भाषाओं में भी उन्नति की क्योंकि बाद के अधिकतर नेता शिक्षित न थे। अतः इस आन्दोलन के प्रचार के लिए उन्होंने क्षेत्रीय भाषाओं का प्रयोग किया। दायरे के मार्गदर्शकों के और सैय्यद मुहम्मद के उपदेश–शब्दों और कहावतों से दायरे भरे हुए हैं, काल्पी के शेख़ बुरहानुद्दीन और गुजरात के मियां मुस्तफ़ा ने तो हिन्दी में कविताएँ लिखी हैं।[39] इस प्रकार मेंहदवी प्रचार व लेखन ने क्षेत्रीय भाषा में जान डाल दी और इसको मालामाल कर दिया। इसके अनुयायी धन और सम्पत्ति को बराबर बाँटने में विश्वास रखते थे।[40] इससे लोगों में एकता और भाईचारे की भावना को पनपने का अवसर प्राप्त होता था। इसके अभी अनुयायी तवक्कुल में विश्वास रखते थे।[41]

मेंहदवियों ने समाज में सौहार्द और एकता लाने के लिए तीन मूल सिद्धान्तों पर काम किया– सामाजिक, भाषिक और भावनात्मक। वास्तव मेंहदवी सूफ़ी सन्तों के दायरे ऐसे स्थान थे जहाँ लोग शिक्षा के साथ–साथ धर्म का भी प्रचार करते थे। सन्तों के बीच मांगलिक भावनाओं और समझौते के वातावरण में विचारों का आदान–प्रदान किया जाता था। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि इन सूफ़ियों के दायरों में हिन्दवी वाक्य बोले गए।[42] हिन्दी ही हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच सम्प्रेषण का माध्यम बनी। इस प्रकार अपने पास के रहने वालों की भाषा अपनाकर सूफ़ी सन्तों ने सामाजिक और भावनात्मक एकता की प्रगति को तेज कर दिया। समाज में रूढ़िवाद तथा अंधविश्वास का प्राबल्य था, इन बुराइयों के विरूद्ध सूफी सन्तों ने संघर्ष किया, अंधविश्वास एवं कुरीतियों के विरूद्ध ज्ञान का प्रकाश प्रज्ज्वलित किया।

सन्दर्भ एवं टिप्पणियां

1. अब्दुल कादिर बदायूनी, मुन्तरवब–उत–तवारीख, भाग–1, कलकत्ता, 1868–69, पृ0 319
2. डी.एस. मारगोलियथ, मेंहदवी एंड महदविज़्म, लंदन, 1915 ई0, पृ0 1 (सैय्यद अतहर अब्बास रिज़वी, मेंहदवी मूवमेंट इन इंडिया, मेडिवल इंडिया क्वाटरली, भाग–1, नं0–1, जुलाई, 1950 ई0, पृ0 10 से उद्धृत) जेम्स हेस्टिंग्स, इनसाइक्लोपीडिया ऑफ रेलीजन एंड एथिक्स, एडिमबर्ग, 1914 ई0, भाग–VIII, पृ0 336–40, इनसाइक्लोपीडिया ऑफ इस्लाम, भाग–III, पृ0 111–115 (सैय्यद अतहर अब्बास रिजवी पूर्ववत् से उद्धृत, पृ0 10)
3. डॉ0 लईक अहमद, भारतीय मध्यकालीन संस्कृति, इलाहाबाद, सन् 1968, पृ 028
4. डी0एस0 मारगोलियप, पर्ववत्, पृ0 2–4, सैय्यद अशरफ जहांगीर समनानी, लताएफ–ए–अशरफी, एम.एस. अलीगढ़ विश्वविद्यालय, लायेब्रेरी, फो. 44(सैय्यद अतहर अब्बास रिज़वी, पूर्ववत्, पृ0 10 से उद्धृत), डॉ0 कमरुद्दीन, द मेहदवी मूवमेंट इन इंडिया, दिल्ली, 1985 ई., पृ0 28
5. फिरोजशाह तुगलक, फुतुहात–ए–फिरोजशाही, अलीगढ़, 1943 ई0, पृ0 7–8 (मियां मोहम्मद सईद, दा शर्की, सल्तनत ऑफ जौनपुर, करांची, 1972 ई0, पृ0 284 से उद्धृत)
6. सैय्यद अतहर रिजवी, ''मेंहदवी मूवमेंट इन इंडिया'' (मिडिवल इंडिया क्वाटरली), जुलाई, 1950 ई0, भाग–1, नं0–1, अलीगढ़ विश्वविद्यालय, इतिहास विभाग, पृ0 10, मियां मुहम्मद सईद, द शर्की सल्लनत ऑफ जौनपुर, करांची, 1972 ई0, पृ0 284
7. शाह अब्दुल रहमान, सीरत इमाम मेंहदी मौदूद (मौलूद शाह अब्दुर रहमान), हैदराबाद, 1948ई., पृ0 5–25 (कमरूद्दीन, दा मेंहदवी मूवमेंट इन इंडिया, दिल्ली, 1985ई., पृ0 28 से उद्धृत), शाह बुरहान, शवाहिद उल–विलायत, हैदराबाद, 1959ई., पृ0 25, सैय्यद मुस्तफा, मुकदमा सिराज–अल अबसार, हैदराबाद, 1963ई., पृ0 2, मंसूर खान बुरहानपुरी, जन्नात अल विलायत, हैदराबाद, 1954ई., पृ0 5, सैय्यद वली, सवानेह मेंहदी मौदूद, उर्दू, दिल्ली, 1930ई., पृ0 31 (डॉ0 कमरूद्दीन, पूर्ववत् से उद्धृत)
8. सैय्यद इक़बाल अहमद, सलातीने शर्क़ी व सूफिया–ए–जौनपुर, जौनपुर, 1988ई., पृ01 091, मौलवी रहमान अली, तजकिरा उलमा–ए–हिन्द, गुलाम सरवर, खजीनत–उल–असफिया, भाग–1, लाहौर, 1068ई., पृ0 467 मियां मो0 सईद, पूर्ववत्, पृ0 285 (सैय्यद अहमद, सैय्यद मोहम्मद के बड़े भाई थे। ये भी शेख दानियाल के शिष्य थे। इन्होंने अपने अध्यापक के पत्र इकट्ठा किए और उनको मकालात अल खिजयाह का नाम दिया। इक़बाल अहमद खान, तारीख शीराजे हिन्द, उर्दू, जौनपुर, नोडेट, पृ0 622)
9. सै. ए.ए. रिजवी, एम.आई.क्यू., मेंहदवी मूवमेंट इन इंडिया, भाग–1, नं0–1, 1950 ई., अलीगढ़, पृ0 111, मौलवी रहमान अली, पूर्ववत्, 445
10. पूर्ववत, पृ0 446
11. पूर्ववत्, पृ0 446। (डॉ0 कमरुद्दीन, पूर्ववत्, पृ0 35 से उद्धृत)
12. मालवी रहमान अली, तज़केरा–ए–उल्मा–ए–हिन्द, उर्दू अनुवाद, करांची, 1961, पृ0 446
13. शाह बुरहान, पूर्ववत्, पृ0 95 (डॉ0 कमरुद्दीन, पूर्ववत्, पृ0 36ा से उद्धृत)
14. मौलवी रहमान अली, पूर्ववत्, पृ0 446
15. शाह बुरहान, शवाहिद–अल विलायत, हैदराबाद, 1969ई0., पृ0 328 (डॉ0 कमरूद्दीन, पूर्ववत्, पृ0 29 से उद्धृत)
16. हाजी–उद–दबीर, जफरूल वली बी मुज़फफर वालीह, डेनीसन रास (ऐन अराबिक हिस्ट्री ऑफ गुजरात) लन्दन, 1921–28, पृ. 34 मोलवी रहमान अली, तजकिरा, पृ. 146
17. मौलवी रहमान अली, पूर्ववत्, पृ. 446–46
18. मियां मोहम्मद सईद, द शर्की सल्तनत ऑफ जौनपुरी, करांची, 1972 ई., पृ. 289
19. सै. इक़बाल अहमद, शर्की राज्य जौनपुर का इतिहास, जौनपुर, नो डेट, पृ. 724
20. अबुल केलाम आजाद, तजकिरा, लाहौर, नो डेट, सै. इक़बाल अहमद के शर्की राज्य जौनपुर के इतिहास से उद्धृत, पृ. 724
21. सै. ए.ए. रिजवी, मेंहदवी मूवमेंट इन इंडिया, एम.आई.क्यू, भाग–1, नं0–1, 1950 ई0, अलीगढ़, पृ. 12
22. मुल्ला अब्दुल कादिर बदायूंनी, मुन्तखब उत तवारीख, संपादक, अहमद अली, भाग–III कलकत्ता, 1868–69 ई., पृ. 67
23. अब्दुल कादिर बदायूंनी, मुन्तखब उत तवारीख, भाग–I, पूर्ववत्, पृ. 319
24. सै. ए.ए. रिजवी, पूर्ववत्, पृ. 13
25. शाह बुरहानुद्दीन, शवाहिदुल विलायत एम.एस., 109 (सै. ए.ए. रिजवी, पूर्ववत्, 13 से उद्धृत)
26. बंदगी मिया अब्दुल रशीद, नक्लियात, हैदराबाद, एम.एस. पृ. 9 (सै. ए.ए. रिजवी, पूर्ववत्, 13 से उद्धृत)
27. पूर्ववत्, पृ. 15, सै. ए.ए. रिजवी, मुस्लिम रेवलिस्ट मूवमेंट इन नार्दर्न इंडिया, आगरा, 1965 ई., पृ. 102–5

28. सै. ए.ए. रिजवी, एम.आई.क्यू., पूर्ववत्, पृ. 14
29. बंदगी मिया अब्दुल रशीद, नक्लियात, हैदराबाद, 1949 ई., पृ. 6 (सै. ए.ए. रिजवी, पूर्ववत्, 14 से उद्धृत)
30. सै. ए.ए. रिजवी, मेंहदवी मूवमेंट इन इंडिया, मिडिवल इंडियन क्वाटरली, भाग–1, नं0–1, जुलाई, 1950 ई0, अलीगढ़, पृ. 14
31. मियां ख्वांदमीर, अकीद–ए–खलीफा, हैदराबाद, नोडेट, पृ. 1 (सै. ए.ए. रिजवी, पूर्ववत्, पृ. 14 से उद्धृत)
32. सै. ए.ए. रिजवी, मुस्लिम रेवलिस्ट मूवमेंट इन नार्दर्न इंडिया, आगरा, 1965 ई., पृ. 102–5
33. सै. अतहर अब्बास रिजवी, मेंहदवी मूवमेंट इन इंडिया, मिडिवल इंडियन क्वाटरली, भाग–1, नं0–1, जुलाई, 1950 ई., अलीगढ़, पृ. 14
34. बंदगी मिया अब्दुल रशीद, नक्लियात, हैदराबाद, 1949 ई., पृ. 6 (सै. ए.ए. रिजवी, पूर्ववत्, 15 से उद्धृत)
35. सै. अतहर अब्बास रिजवी, पूर्ववत्, पृ. 15–16
36. मियां मो. सईद, पूर्ववत्, पृ. 29
37. सै. ए.ए. रिजवी, पूर्ववत्, पृ. 16
38. मियां मोहम्मद सईद, द शर्की सल्तनत ऑफ जौनपुर, 1972 ई., पृ. 291
39. डॉ. कमरुद्दीन, द मेंहदवी मूवमेंट इन इंडिया, दिल्ली, 1985 ई., पृ. 83
40. मियां मो. सईद, पूर्ववत्, पृ. 292
41. डॉ. कमरुद्दीन, द मेंहदवी मूवमेंट इन इंडिया, दिल्ली, 1985 ई., 85
42. डॉ. कमरुद्दीन, पूर्ववत्, पृ. 83